मैथिली साहित्यक काल-विभाजन

डॉ पंकज कुमार

कोनो साहित्यक निर्माण मे परम्परा ओ पृष्ठभूमिक बड़ पैघ योगदान रहैत अछि। कवि वा लेखक अपन परम्परासँ जुड़ि तत्कालीन परिस्थितिक सम पृष्ठभूमिक कार्य करैत रहैत छथि। देशक सामाजिक, आर्थिक राजनीतिक, सांस्कृतिक ओ धार्मिक परिस्थिति एहि जन चित वृत्तिक मूलमे प्रेरक तत्वक रूपमे विद्यमान रहैत अछि। एहि बदलैत परिस्थितिक अनुकूल जनताक बदलैत मनोदशा ओ भाव तथा प्रत्येक क्रिया परिवर्तनक विवरण तथा पुनः सामंजस्य के स्पष्ट रूपें परिलक्षित करब साहित्येतिहासकार कर्तव्य होमत छनि। एहि क्रममे कोनो इतिहासकारक समक्ष प्रथम समस्या काल-विभाजन होइत अछि। इतिहासकार लोकनिकें अपन कार्यक आरम्भहिमे काल-विभाजन क प्रसंग सर्वाधिक कठिन, दुरूह, महत्व-पूर्ण निर्णय लेबय पड़ैत छनि। वास्तवमे काल-विभाजन एक कठिन समस्या अछि, किएक त' एकर कोनो एकटा कसौटी निर्धारित नहि कयल जा सकैत अछि। सैह एहि कारण अछि जे संभवतः कोनो साहित्यक इतिहासक काल-विभाजन पूर्ण आ वैज्ञानिक नहि अछि। यथार्थतः कोनो काल

विशेषक सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक परिस्थितिक अनुकूल जे विचार ओ भावधारा प्रवाहमान होइत अछि ओकरहि परिप्रेक्ष्यमे कोनो साहित्यक इतिहासक काल-विभाजन होयबाक चाही तथा काल-विशेषक रचनाक प्रवृत्तिक प्राबल्यक आधार पर कालक-नामकरण होयबाक चाही।

मैथिली साहित्यकेँ काल विशेषक रचना प्रवृत्तिक आधार पर तीन भागमे विभाजित कएल जा सकैत अछि— पद्यकाल, नाटककाल एवं गद्यकाल। प्रतिभाशाली साहित्यकारक नामक आधार पर सेहो काल-विभाजन कएल जाइत अछि, यथा- विद्यापति युग, चन्दा झा युग आदि।

मैथिली साहित्यक काल विभाजन बहुतो विद्वान लोकनि द्वारा कएल गेल अछि। विभिन्न लोकनि द्वारा अपन-अपन मतकेँ विशेषजे विशेष शुद्ध ओ प्रमाणित मानल जयबाक हेतु जतय युक्ति उपस्थित कएल गेल अछि, ततय दोसर विद्वान पूर्ववर्ती विचारक मतकेँ अशुद्ध

ओ भ्रामक प्रमाणित करबाक हेतु बेसी पर्याप्त तर्क उपस्थित कएल गेल अछि एहेन विद्वान लोकनिमे प्रमुख छथि डॉ० उमेश मिश्र, कुमार गंगानंद सिंह, डॉ० सुभद्र झा, डॉ० जयकान्त मिश्र, प्रो० रमानाथ झा, डॉ० बालगोविन्द झा 'व्यथित', डॉ० शैलेन्द्र मोहन झा डॉ० दुर्गानाथ झा 'श्रीश', प्रो० राधाकृष्ण चौधरी आ डॉ० दिनेश कुमार झा।

डॉ० उमेश मिश्र 'कृष्ण-जन्मक भूमिका' ओ 'मैथिली भाषा ओ साहित्य' एहि दुनू प्रसंग पर अपन मत व्यक्त कयलनि अछि। कृष्ण-जन्मक भूमिका मे काल-विभाजनक प्रसंग हिनक मत अछि —

(क) 1000 ई०-1300 ई० - आदिकाल
(ख) मध्यकाल → 1300 ई० — 1800 ई०
(ग) आधुनिक काल → 1800 - अद्य--

मैथिली भाषा ओ साहित्यमे काल-विभाजनक प्रसंग हिनक विचार निम्न रूपे अछि —:

(क) आदिकाल → 1000 ई० — 1600 ई०
(ख) मध्य काल → 1600 ई० - 1859 ई०
(ग) आधुनिक काल → 1860 ई० - अद्यावधि

स्व० कुमार गंगानंद सिंह मैथिली साहित्यक काल-विभाजनक प्रसंग अपन मत 'मैथिली साहित्यक प्रगति' शीर्षक निबन्ध मे कयने छथि। हिनक अनुसार —

(क) आदिकाल → 800ई०-1300ई०
(ख) मध्यकाल → 1300ई०-1800ई०
(ग) आधुनिककाल - 1800ई- अद्य-

मूर्धन्य विद्वान एवं प्रसिद्ध भाषाविद् डा० सुभद्र झा अपन पुस्तक 'Formation of Maithili Language' मे कालविभाजनक प्रसंग अपन मत निम्न रूपे व्यक्त कएने छथि —।

(i) Old Maithili - A.D 1000 to A.D 1300
(ii) Middle Maithili → A.D. 1300 to 1800
(iii) Modern Maithili → A.D. 1800 onward

कुमार साहेब आ डा० सुभद्र झाक आदिकालक प्रसंग फराक मत छनि किन्तु मध्यकाल ओ आधुनिक कालमे आबि दुनूक मत मिलि जाइत अछि।

वरिष्ठ मैथिली इतिहासकार डॉ० जयकान्त मिश्र काल-विभाजनक प्रसंग अपन विचार 'History of Maithili literature' मे निम्न

रूपें व्यक्त कएने छथि —
(i) (क) प्राक् मैथिली — 800ई० – 1300ई०
(ख) आदि काल → 1300ई० – 1600ई०
(ii) मध्यकाल → 1600ई० – 1860ई०
(iii) आधुनिक काल → 1860ई० से अद्यावधि

डॉ. मिश्र प्राक् मैथिलीकाल ओहि समय के कहलनि जखन मैथिली भाषा बनि रहल छल आ जखन ओ पूर्णता प्राप्त कएलक तखनहि आदि-काल मानलनि। आदिकाल, मध्यकाल तथा आधुनिक काल जाहिमे क्रमशः गीत, नाट्य ओ गद्य अपन-अपन काव्य विकासक प्रतिनिधित्व करैत अछि। डॉ० मिश्र एक दिस 1300ई० से मैथिली साहित्यक आरम्भ मानैत छथि तँ दोसर दिस विद्यापतिक पूर्वक साहित्यकें 'प्राक् विद्यापति साहित्य' क नाममे विस्तारित रूपें चर्चा सेहो कयने छथि। एहि साहित्यमे 'वर्णरत्नाकर' क संग-संग 'चर्यापदहुक' चर्चा ओ बड़ परिश्रम पूर्वक कयने छथि। तें 1300ई० से मैथिली साहित्यक आरम्भ बहुतो विद्वान तर्कसंगत नहि मानैत छथि।

मैथिली साहित्यक प्रसिद्ध समालोचक प्रो० रमानाथ झा मैथिली साहित्यक काल-विभाजनक प्रसंग अपन

मन्तव्य डॉ० दुर्गानाथ झा 'श्रीश' द्वारा रचित ग्रन्थ 'मैथिली साहित्यक इतिहास' क भूमिकामे देने छथि। ई मैथिली साहित्यके मात्र दुई गोट युगमे विभाजित कयने छथि जे—

(क) विद्यापति युग- कृष्णाकाव्य युग
(ख) चन्दाझा युग- रामकाव्य युग

डॉ० बालगोविन्द झा 'व्यथित' अपन 'मैथिली साहित्यक इतिहास' ग्रन्थ मे काल-विभाजनक प्रसंग निम्नलिखित विचार उपस्थित कयने छथि—

(क) आदिकाल → 1325 ई० से पूर्वक काल
(ख) मध्यकाल → 1325 ई - 1860 ई०
(ग) आधुनिक काल → 1860 ई०- अद्यावधि

प्रसिद्ध विद्वान तथा ख्यातनामा समालोचक डॉ० शैलेन्द्र मोहन झा 'आधुनिक मैथिली साहित्यक विकास' नामक अपन अप्रकाशित शोध प्रबंधमे मैथिली साहित्यक काल-विभाजन एहि रूपमे कयने छथि —

(क) आदि काल → 1300 से 1550 ई०
(ख) मध्यकाल → 1550 से 1857 ई०
(ग) आधुनिक काल → 1857 से अद्यपर्यन्त

डॉ दुर्गानाथ झा 'श्रीश' मैथिली साहि-

एक काल-विभाजनक प्रसंग अपन मन्तव्य 'मैथिली साहित्यक इतिहास' नामक ग्रन्थमे प्रस्तुत कयने छथि। हिनक अनुसार —

(i) आदिकाल, प्राक्ज्योतिरीश्वर युग, अपभ्रंश युग → 1300ई० सँ पूर्व

(ii) मध्यकाल -

(क) विद्यापति युग → 1300ई - 1700ई०

(ख) उत्तर विद्यापति युग → 1700 - 1860ई०

(iii) आधुनिक युग →

(क) वातावरण निर्माण - 1860 - 1880ई०

(ख) चन्दा झा युग → 1880 - 1930ई०

(ग) नव विकास युग → 1930 सँ अद्य -

प्रो० राधाकृष्ण चौधरी मैथिली साहित्यक काल-विभाजनक प्रसंग अपन 'A Survey of Maithili Literature' नामक ग्रन्थ मे अपन मत व्यक्त कएने छथि। हिनक अनुसार —

(i) Early Maithili literature - c. 900 - 1350 AD

(ii) Middle Maithili literature → c. 1350 — 1830 A.D.

(iii) Modern Maithili literature - from 1830 to date.

काल विभाजनक प्रसंग डॉ० दिनेश

कुमार झा अपन 'मैथिली साहित्यक आलोचनात्मक इतिहास' मे विचार व्यक्त करैत लिखैत छथि →

(क) आदिकाल → 800ई- 1350ई०
(ख) मध्यकाल → 1350ई० 1857ई०
(ग) आधुनिककाल →
(i) ब्रिटिश काल → 1857ई- 1947ई०
(ii) स्वतंत्रता काल → 1947ई-अद्यपर्यन्त

एहि तरहें साहित्यक काल विभाजनक प्रसंग विद्वान लोकनि अपन-अपन मतक प्रतिपादन कयलनि अछि। काल-विभाजनक ई तात्पर्य नहि होइत अछि जे एक कालक समाप्त भेलाक तुरंते दोसर दिन साहित्यक धारा आन दिशामे प्रवाहित होमय लागैछ। यथार्थ ई होइछ जे साहित्यक विकास गणितक नियम सदृश नहि होइत अछि। एक कालक विचारधारा दोसर कालमे चलैत अछि तथा एहि साहित्यिक प्रवृत्तिक अन्त पूर्णतया कहियो नहि होइछ। मैथिली साहित्य एहि तथ्यक अपवाद नहि अछि।

आदिकालक जतेक सामग्री अछि तहिमे मुख्य रूपसँ सिद्ध साहित्य एवं ज्योतिरीश्वरक वर्ण-

रत्नाकर' अनैछ। मध्यकाल विद्यापति
क रचनासँ प्रारम्भ भ' हुनकहि अनु-
सरण पर चालित होइत अछि। आ
वर्तमान काल चन्दा झासँ लऽ आजुक
साहित्यकार धरि गतिमान अछि।

मैथिली साहित्यमे आधु-
निक युग एक सए पचास वर्ष लगभग
बीतल अछि, परन्तु एतबहि अल्प
समयमे गद्य-पद्य दुनू रीतिक साहि-
त्यक अभूतपूर्व विकास भेल अछि जा
ओहि मध्य नव-नव प्रवृत्तिक विलक्षण
समाहार होइत रहल अछि।

कोन रीति वा नीतिक भार
स्थिर नहि रहैत अछि। एहन स्थिति
में कतको विद्वान आधुनिक युगकेँ
दू वा तीन खण्डमे मत विभाजित कर-
बाक मत देने छथि। प्रो० चीरेन्द्र
1825 ई०-1925 ई० धरि पुनर्जागरण युग
ओ 1950 सँ अद्यपर्यन्तके नवयुगक
संज्ञा देने छथि। एकर विपरीत डा०
दिनेश कुमार झा 1857 ई० सँ 1947 ई०
धरिकेँ ब्रिटिशकाल ओ 1947 सँ अद्या-
वधि स्वतंत्रताकाल क नामे दू भाग
में आधुनिक युगकेँ विभाजित कयने
छथि।

Scanned with CamScanner

साहित्यक इतिहासमे ई काल एहि कारणेँ आधुनिक काल कहल जाइत अछि जे अंग्रेज समक द्वारा राज्य स्थापना एवं नवीन शिक्षाक फलस्वरूप जीवनक नव परिस्थिति उत्पन्न भेल तथा साहित्यक रूपरेखा सेहो परिवर्तित भेल। एहि कालमे अँग्रेजी तथा अन्य यूरोपीय साहित्यक मैथिली साहित्य पर प्रचूर प्रभाव पड़ल।

एहि प्रकारेँ प्रत्येक कालमे साहित्यक मूल विधाजमे उत्तरोत्तर उन्नति करैत आबि रहल अछि आ विकासक क्रम पर अग्रसर अछि।

अस्तु

डॉ० पंकज कुमार
अतिथि शिक्षक
मैथिली विभाग,
विश्वेश्वर सिंह जनता महा०
राजनगर (मधुबनी)

Scanned with CamScanner